Paper-I
Unite-3

Dr. Raj Gopal
Assistant Professor (G/PT)
Department of Philosophy
V.S.J. College Rajnagar
Madhubani (L.N.M.U Darbhanga)
Mail ID:- rajgopal7755@gmail.com

Topic :⇒ Charvaka: Concept of God
(चार्वाक के ईश्वर की अवधारणा)

चार्वाक दर्शन ईश्वर की सत्ता का निषेध करता है। दर्शनशास्त्र में अध्यात्मिक धार्मिक एवं नैतिक मूल्यों के रक्षक एवं सृष्टि के कर्ता, नियामक एवं संरक्षक के रूप में ईश्वर की सत्ता को स्वीकार किया जाता है। चार्वाक दर्शन किसी भी रूप में ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं करता है। वह ईश्वर की कल्पना को धार्मिक भ्रान्ति मानता है। संसार की उत्पत्ति चतुर्भूतों के आकस्मिक संयोग से होता है इसमें ईश्वर की कोई आवश्यकता नहीं है। चार्वाक ईश्वर को प्रमाणित करने के लिए जितने भी तर्क दिये गये हैं उसका खंडन कर ईश्वर का विरोध करता है।

(i) ज्ञान प्राप्ति का एकमात्र साधन प्रत्यक्ष है। प्रत्यक्ष से ईश्वर का ज्ञान नहीं होता है क्योंकि वह आकाररहित है। अतः ईश्वर की सत्ता नहीं है।

(ii) ईश्वर की सत्ता को प्रामाणिक ग्रन्थों के आधार पर सिद्ध करते हैं। उदाहरण के लिए वेद, गीता, महाभारत आदि प्रामाणिक ग्रन्थ हैं। चार्वाक वेद, गीता आदि की प्रामाणिकता में अविश्वास करता है। चार्वाक वेद को धूर्त पुरोहितों की कृति मानता है। ये अज्ञानी तथा भोले भाले मनुष्यों को धोखे में डालकर अपनी जीविका का प्रबंध किया है।

Scanned with CamScanner

(iii) सभी दर्शनों में संसार के स्रष्टा के रूप में ईश्वर की सत्ता को स्वीकार किया गया है। चार्वाक इस विचार का खंडन करता है। यह इस संसार को पृथ्वी, जल, वायु एवं अग्नि के आकस्मिक संयोग से उत्पन्न मानता है।

(iv) किसी वस्तु के निर्माण के लिए दो प्रकार के कारणों की आवश्कता होती है (क) उपादान कारण (ख) निमित्त कारण जैसे कुम्हार मिट्टी के घड़े का निर्माण करता है। मिट्टी घड़े का उपादान कारण है तथा कुम्हार घड़े का निमित्त कारण है। घड़े के निर्माण के लिए दोनों मिट्टी और कुम्हार का होना अनिवार्य है। चार्वाक के अनुसार विश्व के उपादान कारण चार प्रकार के महाभूत हैं, इसके निमित्त कारण के रूप में ईश्वर की कोई भूमिका नहीं है। भौतिक तत्वों के आकस्मिक या यांत्रिक संयोजन से विश्व का निर्माण हुआ है।

(v) कुछ ईश्वरवादियों का मानना है कि संसार की सारी परिवर्तन नियमित और व्यवस्थित है। इसे नियमित एवं व्यवस्थित करने वाला जो सत्ता है वह सर्वशक्तिमान ईश्वर है। चार्वाक का मानना है कि संसार में जो व्यवस्था दिखती है उसका आधार स्वयं विश्व है। विश्व का स्वभाव ही कुछ इस प्रकार का है कि उसमें अव्यवस्था का अभाव हो जाता है। जिस प्रकार जल का स्वभाव है शीतल होना उसी प्रकार विश्व का स्वभाव है व्यवस्थित होना। इससे यह प्रमाणित होता है कि संसार की व्यवस्था एवं नियमितता का कारण ईश्वर नहीं है।

Scanned with CamScanner

इस प्रकार से चार्वाक दर्शन ईश्वर की सत्ता को निषेध कर अनीश्वरवाद की स्थापना करता है। इस आधार पर यह जैन, बौद्ध एवं सांख्य दर्शन के श्रेणी में आ जाता है। ईश्वर की सत्ता को निषेध करने के कारण चार्वाक दर्शन ईश्वर के गुणों का भी निषेध करता है। दयालु, सर्व शक्ति सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी आदि ईश्वर के कल्पित गुण है। संसार की अपूर्णता, रोग, शोक आदि ईश्वर को सर्वशक्तिमान सिद्ध करने में बाधक है। अगर ईश्वर दयालु होता तो वह भक्तों के कष्ट को अवश्य दूर करता। इस प्रकार से ईश्वर का अस्तित्व नहीं है।

चार्वाक का मानना है कि ईश्वर ईश्वर चिल्लाना अपने आप को धोखा देना है। ईश्वर को प्रार्थना रखने का विचार मानसिक बिमारी है। धर्माचरण, पूजा-पाठ, आदि सब ढकोसला है। धर्म अफिम की तरह व्यक्ति को जकड़ता है। पूजा-पाठ, साधना, जिसमें व्यक्तियों का मन बहलाने का अच्छा साधन है। ईश्वर से प्रेम करना काल्पनिक रमणी से प्रेम करने के समान है।

चार्वाक के ईश्वर विचार के उपरोक्त विवेचन के आलोक में हम निष्कर्षतः कह सकते हैं कि चार्वाक ईश्वर सहित सभी प्रकार के आध्यात्मिक तथ्यों का निषेध करके जड़वाद दर्शन का आधारशिला रखता है। लेकिन जड़तत्वों से चेतन तत्वों की उत्पत्ति, असत से सत की उत्पत्ति नहीं हो सकती है। वे स्वर्ग नरक को पुरोहितों की काल्पनिक धारणाएं मानते हैं। इस प्रकार आत्मा, ईश्वर स्वर्ग, नरक, धर्म, पाप पुण्य को निषेध कर केवल प्रत्यक्ष जगत को वास्तविक मानते हैं। प्रत्यक्ष जगत को एकमात्र सत्य मानने के कारण चार्वाक दर्शन केवल जीवन के सुखों में ही लिप्त है। अतः चार्वाक का जड़वाद का अंतिम परिणति सुखवाद हो जाता है।

Scanned with CamScanner